कक्षा-12 Hindi ✅UP Board Exam 2025

5

V.Imp. 2025

जातक-कथा

सामान्य +साहित्यिक हिंदी

(१) उलूकजातकम्

अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं सर्वाकारपरिपूर्णं पुरुषं राजानमकुर्वन्। चतुष्पदा अपि ... एकं सिंहं

... मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु ...

... इति उक्तवन्तः। अथ ते परस्परम् ...

... इत्यवोचन् ...

अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहणार्थं त्रिकृत्वः अश्रावयत्। ततः एकः काकः

राज्याभिषेककाले एवंरूपं ... च कीदृशं भविष्यति ... क्रुद्धेन अवलोकिताः वय ...

संस्कृत -खंड (चैप्टर -5)

एक एक मीनिंग का ऑपरेशन

By- Arunesh Sir

● LIVE

उलूकजातकम्

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'जातक कथा'** नामक पाठ के **'उलूकजातकम्'** नामक शीर्षक से अवतरित है।

- **अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं**

प्राचीन काल के प्रथम कल्प में लोगों ने एक सुन्दर सौभाग्यशाली

- **सर्वाकारपरिपूर्ण पुरुषं राजानमकुर्वन्।**

और समग्र आकृति से परिपूर्ण पुरुष को राजा बनाया।

- **चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंह राजानमकुर्वन्।**

जानवरों ने भी एकत्रित होकर एक शेर को राजा बनाया ।

- **ततः शकुनिगणाः हिमवत्- प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य**

उसके बाद पक्षीगण हिमालय प्रदेश में एक शिला पर एकत्रित होकर'

- **'मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च।**

मनुष्यों में राजा सुना जाता है और जानवरों में भी

- **अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति।**

लेकिन हमारे बीच में राजा नहीं है।

- **अराजको वासो नाम न वर्तते।**

बिना राजा के रहना उचित नहीं है।

- **एको राजस्थाने स्थापयितव्यः 'इति उक्तवन्तः'।**

किसी एक को राजा के पद पर स्थापित करना चाहिए'- ऐसा कहा।

- **अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा 'अयं नो रोचते' इत्यवोचन।**

तब उन्होंने एक दूसरे पर दृष्टि डालते हुए एक उल्लू को देखकर कहा- 'यह हमको अच्छा लगता है।'

- **अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहणार्थं त्रिकृत्वः अश्रावयत्।**

इसके बाद एक पक्षी ने सभी के बीच में राय जानने के लिए तीन बार घोषणा की ।

- **ततः एकः काकः उत्थाय 'तिष्ठ तावत्'**

तब एक कौआ उठकर बोला-'जरा ठहरो।'

- **अस्य एतस्मिन् राज्याभिषेककाले एवंरूपं मुखं,**

इसका इस राज्याभिषेक के समय ऐसा मुख है

- **क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति!**

तो क्रुद्ध होने पर कैसा होगा?

- **अनेन हि क्रुद्धेन अवलोकिताः वयं तप्तकटाहे**

इसके क्रुद्ध होकर देखने पर तो हम लोग गर्म कड़ाही में

- **प्रक्षिप्तास्तिला इव तत्र तत्रैव धडक्ष्यामः।**

डाले तिलों की भांति वहीं- वहीं पर भुन जायेंगे

- **ईदृशो राजा मह्यं न रोचते इत्याह-**

ऐसा राजा मुझे अच्छा नहीं लगता ऐसा बोला-

- ***न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम्।***

मुझे आपका उल्लू को राज्याभिषेक करना अच्छा नहीं लगता

- ***अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति।।***

इसके अक्रुद्ध मुख को देखो, क्रुद्ध होने पर यह कैसा लगेगा ?

- **स एवमुक्त्वा 'मह्यं न रोचते,' 'मह्यं न रोचते'**

वह ऐसा कहकर 'मुझे अच्छा नहीं लगता', 'मुझे अच्छा नहीं लगता',

- **इति विरुवन् आकाशे उदपतत्।**

ऐसा चिल्लाता हुआ आकाश में उड़ गया।

- **उलूकोऽपि उत्थाय एनमन्वधावत्।**

उल्लू भी उठकर उसके पीछे दौड़ा।

- **तत आरभ्य तौ अन्योन्यवैरिणौ जातौ।**

तभी से लेकर वे एक दूसरे के बैरी हो गए।

- **शकुनयः अपि सुवर्णहंसं राजानं कृत्वा अगमन्।**

पक्षीगण भी सुवर्णहंस को राजा बनाकर चले गए।

नृत्यजातकम्

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'जातक कथा'** नामक पाठ के **'नृत्यजातकम्'** नामक शीर्षक से अवतरित है।

- **अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंह राजानमकुर्वन्।**

विगत प्रथम कल्प में चौपायों ने सिंह को राजा बनाया।

- **मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम्।**

मछलियों ने आनन्द मछली को एवं पक्षियों ने सुवर्ण हंस को राजा बनाया।

- **तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्।**

उस सुवर्ण राजहंस की पुत्री हंसपोतिका अत्यन्त सुन्दरी थी।

- **स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति।**

उसने उस हंसकुमारी को वर दिया कि वह अपने मनोनुकूल पति को चुन ले।

- **हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसंङ्घे संन्यपतत्।**

हंसराज ने उसे वर देकर हिमालय पर पक्षियों की सभा बुलायी।

- **नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य**

नाना प्रकार के हंस मयूर आदि पक्षीगण आकर

- **एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन्।**

एक विशाल शिला पर एकत्रित हुए।

- **हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश।**

हंसराज ने 'अपने चित्त को रुचिकर लगने वाला पति आकर चुनलो ऐसा पुत्री को आदेश दिया ।

- **सा शकुनससंङ्घे अवलोकयन्ती**

उसने पक्षी समूह को देखते हुए

- **मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा**

नीलमणि के रंग की गर्दन और रंग-बिरंगे पंखों वाले मयूर को देखकर

- **'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत।**

यह मेरा स्वामी हो, ऐसा कहा।

- **मयूरः 'अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि'**

मोर ने 'अभी मेरे बल को नहीं देखा है'

- **इति अतिगर्वेण लज्जाञ्चच त्यक्त्वा**

ऐसा कह अति गर्व से और लज्जा त्यागकर

- **तावन्महतः शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्**

उस विशाल पक्षियों की सभा के बीच पंख फैलाकर नाचना आरम्भ कर दिया

- **नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत् ।**

और नाचते हुए नग्न हो गया ।

- **सुवर्णराजहंसः लज्जितः 'अस्य नैव ह्रीः अस्ति न बर्हाणां समुत्थाने लज्जा।**

स्वर्ण वर्ण राजहंस ने लज्जित होकर, 'इसे न लज्जा है न पंखों को उठाने में संकोच,

- **नास्मै गतत्रपाय स्वदुहितरं दास्यामि' इत्यकथयत् ।**

इस लज्जाहीन को अपनी पुत्री नहीं दूँगा ऐसा कहा।

- **हंसराजः तदैव परिषन्मध्ये आत्मनः भागिनेयाय 'हंसपोतकाय' दुहितरमदात्।**

हंसराज ने उसी परिषद् के बीच अपने भांजे हंसकुमार को पुत्री दे दी ।

- **मयूरो हंसपोतिकामप्राप्य लज्जितः तस्मात् स्थानात् पलायितः।**

मोर हंस-पुत्री को न पाकर लज्जित होकर उस स्थान से भाग गया।

- **हंसराजोऽपि हृष्टमानसः स्वगृहम् अगच्छत्।**

हंसराज भी प्रसन्न मन से अपने घर को चला गया।

कक्षा- 12 हिन्दी